75

''और वह चला गया''
(1)

बाइबल पाठ #31

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमशः)।
  ड. मंगलवार: ''प्रश्नों का बड़ा दिन'' (क्रमशः)।
    5. विधवा का दान (मरकुस 12:41-44; लूका 21:1-4)।
    6. भीड़ को संदेश
      क. अन्यजाति यीशु को ढूंढ़ते हैं (यूहन्ना 12:20-22)।
      ख. यीशु की आने वाली मृत्यु-यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए (यूहन्ना 12:23-36)।
      ग. यहूदियों द्वारा यीशु को ठुकराया गया (यूहन्ना 12:37-50)।
    7. यरूशलेम के विनाश और द्वितीय आगमन पर प्रेरितों को संदेश
      क. टिप्पणियां और प्रश्न (मत्ती 24:1-3; मरकुस 13:1-4; लूका 21:5-7)।
      ख. यरूशलेम के विनाश पर शिक्षा
        (1) यरूशलेम के विनाश से असम्बद्ध घटनाएं (मत्ती 24:4-14; मरकुस 13:5-15; लूका 21:8-19)।

परिचय

मंगलवार का दिन आखिर बीतने को था। यीशु और उसके शत्रुओं की मुठभेड़ खत्म हो चुकी थी। मसीह सदा के लिए मन्दिर से दूर जाने वाला था। इस पाठ में हम ''विधवा का दान,'' यीशु से मिलने आए यूनानियों और मन्दिर के विनाश के बारे में प्रभु की चौंकाने वाली घोषणा का अध्ययन करेंगे।[1]

मन्दिर में मुआयना (मरकुस 12:41-44; लूका 21:1-4)

शब्दों की जंग के बाद, यीशु स्त्रियों के आंगन में चला गया।[2] वहां उसने लोगों को मन्दिर के धन के संदूकों में अपना धन डालते देखा। एक विधवा को जिसने, अपने ताम्बे के दो सिक्कों ''अर्थात अपनी सारी जीविका'' को डाल दिया, देखकर उसका मन पिघल गया। वह उससे प्रभावित होकर अपने चेलों में उसकी प्रशंसा करने लगा (मरकुस 12:42-

44; लूका 21:2-4)।

यह मर्मस्पर्शी दृश्य क्यों लिखा गया था? शायद यह यीशु को नाश करने वाले दृढ़ संकल्प लोगों में अन्तर करने के लिए था। यह स्त्री मन्दिर में परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम के कारण आई थी, जबकि सदूकी और फरीसी वहां मुख्यतया यीशु के प्रति घृणा के कारण आए थे। बी. एस. डीन ने टिप्पणी की है, ''बड़ी भर्त्सना [मत्ती 23 में] के बाद यह सुन्दर घटना, किसी हिमनद की गोद में बैंजनी चश्मे की तरह लगती है।''[3]

मन्दिर में ठुकराया जाना (यूहन्ना 12:20-50)

अन्यजातियों द्वारा ढूंढ़ा गया (आयतें 20-36)

कुछ दिन पहले फरीसियों ने यीशु के विषय में कहा था, ''... संसार उसके पीछे हो चला है'' (यूहन्ना 12:19)। अगली घटना मसीह के सर्वसाधारण आकर्षण को दिखाती है: जब प्रभु मन्दिर में था, तो कुछ यूनानी उसे ढूंढ़ते हुए आए।[4] ये अन्यजाति उसकी संगति पाने के लिए उसे ढूंढ़ रहे थे, जबकि उसके शत्रु उसकी जान के पीछे पड़े हुए थे।

हमारे पास ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है कि मसीह इन यूनानियों से आमने-सामने मिला; पर सब लोगों के लिए उसके प्रेम को जानते हुए, हम अनुमान लगा सकते हैं कि वह उनसे मिला। परन्तु एक बार फिर, परमेश्वर के प्रेरणा पाए हुए लेखक का उद्देश्य हमारी जिज्ञासा को सन्तुष्ट करना नहीं था। यूहन्ना ने जो भी *लिखा,* वह विनती किए जाने पर दिया गया प्रवचन था। उस उपदेश का मुख्य पद आयत 32 का दृढ़ कथन है: ''और मैं यदि पृथ्वी पर से [क्रूस पर] ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा''। ''सब को'' का अर्थ यहूदियों और अन्यजातियों दोनों से है।

उपदेश के अन्त में, यूहन्ना ने कहा कि यीशु ''चला गया'' (आयत 36ख)। प्रभु की सार्वजनिक शिक्षा समाप्त होने वाली थी।

यहूदियों द्वारा ठुकराया गया (आयतें 37-50)

यूहन्ना ने यहूदी जाति में प्रभु की सेवकाई को संक्षेप में बताते हुए मसीह के वहां से चले जाने का हवाला दिया: उसके बहुत से चिह्नों (आश्चर्यकर्मों) को देखने के बावजूद उन्होंने विश्वास नहीं किया था (आयत 37)। यूहन्ना ने ज़ोर देकर कहा कि उनका मसीह को ठुकराया जाना यशायाह 6:10 और 53:1 की भविष्यवाणियों का पूरा होना था। फिर इस प्रेरित ने यह कौतुहल उत्पन्न करने वाली टिप्पणी जोड़ दी:

> तौ भी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं। क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी (यूहन्ना 12:42, 43)।

यहूदी अगुवे यह भली-भांति जानते थे कि यीशु ने आश्चर्यकर्म किए थे (यूहन्ना 11:47), परन्तु इस ज्ञान से उन पर स्पष्ट प्रभाव नहीं पड़ा। अब यूहन्ना ने यह दिखाया कि ऐसा क्यों हुआ था। आश्चर्यकर्मों का उन पर प्रभाव तो पड़ा *था,*[5] परन्तु वे अपने विश्वास को छिपा रहे थे। वे ''महासभा से निकाले जाने'' से बच रहे थे, क्योंकि इसका अर्थ उन्हें कौम के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन से निकाला जाना था।[6]

यूहन्ना 12:42 अंगीकार के महत्व को रेखांकित करता है। हमारे मन का विश्वास हमारे होंठों पर भी आना आवश्यक है (रोमियों 10:9, 10)। यदि हम उसका अंगीकार करने से इनकार करते हैं तो वह हमें स्वीकार नहीं करेगा (मत्ती 10:32, 33)।[7]

दुख की बात है कि हाकिमों को परमेश्वर के विचार के बजाय मनुष्यों के विचार का अधिक ध्यान था: ''उन्हें परमेश्वर की स्वीकृति के बजाय मनुष्यों की स्वीकृति अधिक प्रिय थी।'' हम सब ने लोगों की बात और परमेश्वर की बात में से एक को चुनने के लिए अपने आप को तनाव में पाया है। प्राथमिकताओं वाला प्रश्न आज भी एक मुद्दा है। पौलुस ने लिखा है, ''... अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता'' (गलातियों 1:9ख, 10)।

यहूदियों द्वारा यीशु को ठुकराए जाने को देखने के बाद, यूहन्ना ने प्रभु पर विश्वास करने के महत्व तथा विश्वास न करने के परिणामों के बारे में प्रभु की बात दोहराई (यूहन्ना 12:44-50)। पता नहीं यीशु ने ये शब्द कब कहे थे।[8] इनमें, उसने यूहन्ना की पुस्तक में पहले दिए गए परिचय में कई विषयों को जारी रखा:

- 44, 45, 49 और 50 आयतों में, उसने अपने और पिता के बीच निकट सम्बन्ध पर यूहन्ना 5 की तरह ही ज़ोर दिया।[9] इस तरह उसने ज़ोर दिया कि उसे ठुकराने वाले परमेश्वर को भी ठुकराने के दोषी हैं।
- आयत 46 में उसने ''जगत की ज्योति'' का विषय उठाया, जो यूहन्ना 8:12 में बताया गया था, यूहन्ना 9 में इसे विस्तार दिया गया है और यूहन्ना 12:35, 36 में इसका हवाला दिया गया है।[10]

47 और 48 आयतों में यीशु की बात में इस सच्चाई पर कि हम बिना उसकी शिक्षाओं को मानें मसीह को ग्रहण (उसमें विश्वास) नहीं कर सकते, ज़बर्दस्त आयत मिलती है।

> यदि कोई मेरी बातें सुनकर न मानें तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिए नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिए आया हूं।[11] जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।[12]

मन्दिर से विदाई
(मत्ती 24:1-14; मरकुस 13:1-15; लूका 21:5-19)

एक चौंकाने वाली टिप्पणी (मत्ती 24:1-3;
मरकुस 13:1-4; लूका 21:5-7)

''ऊंचे पर चढ़ाया'' जाने पर संदेश देने के बाद यीशु ''चला गया'' (यूहन्ना 12:36), ''मन्दिर से निकल गया'' (मरकुस 13:1क; देखें मत्ती 24:1क)। मन्दिर से मसीह का जाना महत्वपूर्ण था। परमेश्वर की महिमा (अर्थात यीशु[13]) वहां से चली गई थी, जो कभी लौटकर नहीं आनी थी।[14] यद्यपि मन्दिर का नाश होते-होते कई दशक लग जाने थे, पर इसका नाश तय था (देखें मत्ती 23:37, 38)।

मन्दिर के प्रांगण से मसीह के निकल जाने पर, बाहर से आने वालों की तरह उसके चेले अपने आस-पास की इमारतों की सुन्दरता और भव्यता की तारीफ़ करने के लिए रुक गए। उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, ''हे गुरु, देख, कैसे-कैसे पत्थर और कैसे-कैसे भवन हैं!'' (मरकुस 13:1)। दूसरों ने ध्यान दिलाया कि ''वह कैसे सुन्दर पत्थरों और भेंट की वस्तुओं से संवारा गया है''[15] (लूका 21:5)।

मन्दिर का प्रांगण भव्य इमारत *था,* और यहूदियों का इस पर गर्व करना गलत नहीं था। यह अथेने के अक्रोपुलिस से दोगुना बड़ा था। यह सफ़ेद पत्थर और संगमरमर से बना था! दूर से यह भवन बर्फ़ के पहाड़ जैसा लगता था। हेरोदेस महान ने मन्दिर को 20 ई.पू. में फिर से बनाना शुरू किया था और जिस घटना की हम बात कर रहे हैं, इस समय तक इसका निर्माण कार्य चल ही रहा था।[16] सम्भवतया यरूशलेम में यात्रियों के आने पर, हर बार कुछ न कुछ नया और अद्‌भुत ही जुड़ा था। जोसेफस ने मन्दिर की शोभा बढ़ाने वाले ''मन्नतों के चढ़ावों'' की बात लिखी है। अग्रिप्पा द्वारा मुकुट, ढालें, प्याले और सोने की चेनें भेंट की गई थीं। हेरोदेस की ओर से अंगूर की बड़ी-बड़ी डालियों वाली सोने की दाख भेंट की गई थी।[17] हमें हैरान नहीं होना चाहिए कि चेले यह सब देखकर प्रभावित हुए थे।

परन्तु यीशु के उत्तर से उनका जोश ठण्डा पड़ गया: ''वे दिन आएंगे, जिन में ये सब जो तुम देखते हो, उन में से यहां किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढहाया न जाएगा'' (लूका 21:6)। मसीह ने पहले यरूशलेम और मन्दिर के विनाश की बात की थी (मत्ती 22:7; 23:38; लूका 13:35[18]), परन्तु वे हवाले आमतौर पर सांकेतिक शब्दों में होते थे। इस अवसर पर, उसके शब्दों को गलत समझना कठिन था।

प्रभु ने कहा, ''यहां पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा, जो ढहाया न जाएगा'' (मरकुस 13:2ख)।[19] ''जोसेफस के अनुसार कुछ पत्थर लगभग 70 फुट लम्बे, 12 फुट ऊंचे और 18 फुट चौड़े थे।''[20] मैं प्रेरितों को उन अखंडित पत्थरों को देखकर सोचने की कल्पना कर सकता हूं: ''इनमें से एक भी पत्थर दूसरे पत्थर पर नहीं रहेगा? यह कैसे हो सकता है?'' यरूशलेम का मन्दिर धर्म और इस्राएल की शान की यहूदी अवधारणा का केन्द्र था। इसके विनाश की बात सोची भी नहीं जा सकती थी।

यीशु और उसके अनुयायी मन्दिर से निकल गए, किद्रोन के नाले के पास गए और मन्दिर की पूर्वी चढ़ाई चढ़ गए, जिसे जैतून का पहाड़ कहते हैं–शायद यह वही जगह थी, जहां उन्होंने अपनी कुछ रातें बिताई थीं (लूका 21:37)। ढलान पर बैठकर (देखें मत्ती 24:3क), वे मन्दिर और नगर को ''अपने सामने साफ़, ढलते सूरज की चमकती छाया से उसमें से किरणें निकलते'' देख रहे थे।[21] नीचे मन्दिर के प्रांगन में देखते हुए (मरकुस 13:3क) चेलों के मन में प्रश्न उठ रहे थे।[22] उन्होंने यीशु से पूछा, ''हम से कह कि ये बातें कब होंगी? और तेरे आने का, और जगत के अन्त का क्या चिह्न होगा?'' (मत्ती 24:3; देखें मरकुस 13:4; लूका 21:7)।

चेलों को लगा होगा कि उन्होंने एक ही घटना अर्थात मन्दिर के विनाश की बात पूछी है, पर वास्तव में उन्होंने एक साथ कई प्रश्न पूछ लिए थे। विशेषकर उन्होंने मसीह के ''आने'' और ''जगत के अन्त'' के बारे में भी पूछा था।[23] ''आने'' शब्द यूनानी के *parousia* से अनुवाद किया गया है। सुसमाचार की पुस्तक में यह शब्द केवल मत्ती 24 (आयतें 3, 27, 37, 39) में ही मिलता है।[24] *Parousia* ''किसी राजा के आगमन के लिए यूनानी भाषा का तकनीकी शब्द'' है।[25] जब चेलों ने इस शब्द का इस्तेमाल किया, तो उनके मन में सम्भवतया उसका राज्य स्थापित करने की बात होगी, जिसे वे गलती से सांसारिक राज्य समझते थे।[26] ऐसा होने पर, ''युग के अन्त'' का अर्थ (उनके दिमाग में) वर्तमान राजनैतिक प्रबन्ध (अर्थात रोमियों के घृणित शासन का अन्त) का अन्त होगा। प्रेरितों ने इन प्रश्नों को इसलिए मिला दिया होगा, क्योंकि मसीहा के राज्य (अर्थात उनकी कल्पना के राज्य) के आरम्भ के बिना मन्दिर के विनाश की घटना उनके मन में आ ही नहीं पाई। यीशु के उत्तर का अध्ययन करते हुए हमें यह समझना आवश्यक है कि उसके उत्तर में मन्दिर के विनाश की बात ही नहीं है।

गम्भीर विवाद

मत्ती 24:4–25:46 (मरकुस 13:5–37; लूका 21:8–36 भी देखें) में चेलों के प्रश्नों का मसीह का उत्तर उसके सबसे लम्बे लिखित उपदेशों में और सम्भवतया सबसे विवादपूर्ण है। मत्ती 24 का इस्तेमाल हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों द्वारा यीशु के द्वितीय आगमन के ''चिह्न'' ढूंढ़ने के लिए किया जाता है।[27] वर्तमान अकाल तथा युद्धों को ''चिह्नों'' के रूप में दिखाकर वे खुश होते हैं कि ये प्रभु के दोबारा आने के चिह्न हैं–यीशु की बात के बावजूद कि कोई नहीं जान सकता कि उसका आना कब होगा (मत्ती 24:36)।

सम्बन्धित पदों के साथ मत्ती 24 के अपने अध्ययन पर आते हुए, हमें यह मानना आवश्यक है कि चाहे कैसा भी ढंग अपनाया जाए, यह आयत कठिन है। इसका एक कारण यह है कि यीशु ने ''प्रचलित यहूदी अपोकलिप्टिक रूपक'' का इस्तेमाल किया।[28] अपोकलिप्टिक साहित्य में इसका संदेश देने के लिए विभिन्न (कई बार अजीब) प्रतीकों का इस्तेमाल किया जाता था। यहूदी लोग अपोकलिप्टिक भाषा से परिचित थे। दानिय्येल जैसी परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त पुस्तकों में अपोकलिप्टिक संकेतों का इस्तेमाल करने के

अलावा, पुराने नियम के अन्त और यीशु के जन्म के बीच की सदियों में परमेश्वर की प्रेरणा रहित करतबों की भरमार थी। हम में से अधिकतर लोग ऐसी उपमाओं से अनभिज्ञ हैं, इसलिए हमारे लिए इसके अर्थ निकालना कई बार कठिन होगा।

कठिनाइयों का एक और कारण यह तथ्य है कि प्रभु ने एक ही प्रश्न का नहीं, बल्कि कई अर्थात यरूशलेम के विनाश सम्बन्धी प्रश्नों *और* अपने द्वितीय आगमन सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर दिया: 70 ईस्वी के बाद क्या होगा और युग के अन्त के समय क्या होगा पर उसकी बातें एक-दूसरे के साथ मिलती और उलझ जाती हैं। आम तौर पर उन में अन्तर करना कठिन होता है। अक्सर इस्तेमाल होने वाली दो पहाड़ी चोटियों की उपमा है-छोटी वाली निकट और बड़ी वाली दूर-जिनकी आकृतियां हमारी सुविधा के अनुसार मिलाई गई हैं। बाइबल के अधिकतर विद्वान इस बात से सहमत हैं कि यरूशलेम में विनाश और यीशु के द्वितीय आगमन में गहरा सम्बन्ध है, बेशक इन दोनों घटनाओं में हज़ारों साल का अन्तर है: पहली (यरूशलेम का विनाश) दूसरी (द्वितीय आगमन) का नमूना है।

यद्यपि ये विचार आपस में मिलते लगते हैं, बहुत से लोग इस बात से सहमत हैं कि मत्ती 24 के पहले भाग में यरूशलेम के विनाश पर *ज़ोर* दिया गया है और अन्तिम भाग में *ज़ोर* द्वितीय आगमन पर:

- अध्याय के पहले भाग में, 19 और 20 आयतों पर ध्यान दें: ''उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिए हाय, हाय। और प्रार्थना किया करो; कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े।'' क्या द्वितीय आगमन के साथ बच्चे जनने या मौसम या सप्ताह के दिन का कोई सम्बन्ध है? नहीं। परन्तु इन बातों का सम्बन्ध यरूशलेम के विनाश से अवश्य था।[29]
- अन्तिम भाग में, 40 और 41 आयतों में कुछ के ले लिए जाने और कुछ को छोड़ दिए जाने की बातों पर ध्यान दें। इन आयतों का यरूशलेम के विनाश से तो कोई सम्बन्ध नहीं है, पर दूसरी आमद या द्वितीय आगमन से अवश्य सम्बन्ध है।[30]

मत्ती 24:4-35 (जो यरूशलेम के विनाश पर केन्द्रित है) और 24:36-41 (जो द्वितीय आगमन पर केन्द्रित है) में कई भिन्नताएं बनाई जा सकती हैं। इन में से कुछ भिन्नताएं नीचे दिए गए चार्ट में बनाई गई हैं।[31]

कुछ टीकाकार सहमत हैं कि मत्ती 24 का आरम्भिक भाग यरूशलेम के विनाश पर केन्द्रित है और इसकी अन्तिम आयतें मुख्यतया द्वितीय आगमन पर हैं। इसके बावजूद वे ज़ोर देते हैं कि आयतें एक-दूसरे के ऊपर-नीचे हैं। इसलिए वे अपने आप से ही यह निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र महसूस करते हैं कि कौन सी आयतें प्रथम आगमन से सम्बन्धित हैं और कौन सी दूसरे आगमन से। मत्ती 24 को समझने का एक ढंग यह है,[32] परन्तु इस बात को समझ लें कि यदि आप यह ढंग अपनाते हैं, तो आपको आयत 34 को भी समझना होगा जहां यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें

पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।'' आयत 34 को स्वाभाविक ढंग से लेने का तरीका यह है कि मसीह ने कहा कि 4 से 33 आयतों में कही गई उसकी सब बातें उस समय रह रहे कुछ लोगों के जीवन काल में ही पूरी हो जाएंगी।[33] यूनानी शब्द के अनुवाद ''पीढ़ी'' (*genea*) का अर्थ सामान्यतया समय के एक विशेष काल में रहने वाले लोगों के लिए किया जाता है। मत्ती 24:34 में यह बात कहने से पहले यीशु ने यह भविष्यवाणी करने के लिए कि उसके सुनने वालों पर भयंकर बातें आएंगी, इसी शब्द का इस्तेमाल किया था (मत्ती 23:36; मत्ती 24:34 से तुलना करें)।

मत्ती 24:24-33 को पूरे या इसके भाग को द्वितीय आगमन के लिए बताने वाले लोग आयत 34 का अर्थ नहीं बता सकते। उनमें से कई यह ज़ोर देते हैं कि इस आयत में ''पीढ़ी'' का अर्थ ''जाति'' अर्थात यहूदियों की जाति होना चाहिए। आर. टी. फ्रांस की टिप्पणी है, ''संज्ञा के लिए ऐसे असम्भव शब्द का सुझाव नामुमकिन लगता है'' यदि इस पद से व्याख्याकर्त्ताओं को परेशानी न हुई हो।[34] जैक पी. लुइस ने लिखा है:

> पीढ़ी (*genea*) का अर्थ सम्पूर्ण अध्याय की व्याख्या के लिए कठिन है। यद्यपि जेरोम की नकल करते हुए स्कोफिड ने यह मान लिया कि इसका अर्थ यहूदी जाति था, परन्तु नये नियम में केवल एक सम्भावित मामला है (लूका 16:8) जहां शब्दकोष यह सुझाव देता है कि *genea* का अर्थ जाति है। *genos* (जाति) और *genea* (पीढ़ी) में अन्तर है। दूसरों ने तर्क दिया है कि *genea* का अर्थ अन्तिम पीढ़ी है; अर्थात चिह्नों के आरम्भ होने पर, ये सब बातें एक ही पीढ़ी में पूरी हो जाएंगी (तुलना 23:36)। परन्तु मत्ती में कहीं और *genea* का अर्थ एक समय में रहने वाले लोग और सामान्यतया यीशु के समय में रहने वाले लोग है (1:17; 11:16; 12:39, 41, 45; 23:36; मरकुस 8:38; लूका 11:50 से 17:25) और निस्संदेह यहां इसका अर्थ यही है।[35]

अगले अध्ययन में[36] आयत 34 का अर्थ यह लिया जाएगा कि पिछली आयतों की घटनाएं उसी पीढ़ी में होनी थीं, जब मसीह ने वे शब्द कहे थे।[37] इस ढंग से उठने वाली कठिनाइयां[38] वैसे ही मानी जाएंगी जैसे वे वचन में हैं।

एक महत्वपूर्ण आरम्भ (मत्ती 24:4-14; मरकुस 13:5-15; लूका 21:8-19)

हम मत्ती 24 और मरकुस तथा लूका में इससे सम्बन्धित पदों पर अध्ययन आरम्भ करने को तैयार हैं, जो अगले पाठ में पूरा होगा।

मसीह ने अपना संदेश कई ''अचिह्नों'' के साथ आरम्भ किया। यरूशलेम का विनाश यहूदियों के लिए एक ऐसी भयानक घटना होना था कि यीशु की भविष्यवाणी को पूरा होते देखने वालों को लग सकता था कि हर बात इस का चिह्न थी कि यह होना ही था। इस उदाहरण पर विचार करें: यदि किसी ने भविष्यवाणी की हो कि मेरा घर नष्ट हो जाएगा-

और मैंने उसे मान लिया–तो छोटे से छोटे तूफ़ान से मुझे घबराहट होगी। मसीह ने अपने अनुयायियों को गुमराह नहीं करना चाहा (मत्ती 24:4; मरकुस 13:5; लूका 21:8क), सो उसने पहले उन्हें *निश्चित तौर पर गुमराह करने वाले चिह्नों* के प्रति सचेत किया।

झूठे मसीह: उसने कहा कि झूठे मसीह उठ खड़े होंगे (मत्ती 24:5; मरकुस 13:6; लूका 21:8ख; मत्ती 24:24 के आगे भी देखें; मरकुस 13:22)। उसने सावधान किया, ''तुम उनके पीछे न जाना'' (लूका 21:8ग)। क्योंकि उस ज़माने में कभी–कभी कोई आदमी झूठे दावे करके लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर सकता था (देखें प्रेरितों 5:34–39; 21:38)।[39]

लड़ाइयां और लड़ाइयों की अफ़वाहें: लड़ाइयों की अफ़वाहें तथा अन्य गड़बड़ियां चेलों को चौकस करने के लिए नहीं थीं (मत्ती 24:6क; मरकुस 13:7क; लूका 21:9क)। प्रभु ने समझाया, ''... क्योंकि इनका होना आवश्यक है, परन्तु उस समय [यरूशलेम और मन्दिर का] अन्त न होगा'' (मत्ती 24:6ख; देखें मरकुस 13:7ख; लूका 21:9ख)। ये शब्द उस समय कहे गए थे, जब रोमी साम्राज्य में शान्ति थी; परन्तु इतिहासकारों के अनुसार कुछ ही देर बाद लड़ाई भड़क उठी थी।

प्राकृतिक आपदाएं: मसीह ने यह भी ध्यान दिलाया कि प्राकृतिक आपदाएं जैसे अकाल, मरी और भूकम्प होंगे (जैसे हमेशा होते हैं) (मत्ती 24:7ख; मरकुस 13:8ख; लूका 21:11[40])। यीशु ने इन्हें ''पीड़ाओं का आरम्भ'' ही कहा (मत्ती 24:8; देखें मरकुस 13:8ग)। ''आरम्भ'' 6 और 14 आयतों वाले ''अन्त'' शब्द के विपरीत हैं। अन्य शब्दों में, ये प्राकृतिक आपदाएं ''अन्त का चिह्न'' *नहीं* होनी थीं।

कलीसिया के सम्बन्ध में संकट: यीशु के अनुयायियों को सताव की उम्मीद रखने की चेतावनी दी गई (मत्ती 24:9; मरकुस 13:9क; 13क; लूका 21:12क, 16ख, 17)।[41] परन्तु प्रभु ने उनके साथ होने की प्रतिज्ञा की (लूका 21:18[42]) और उन्हें बताया कि वे सताव को अपने विश्वास की गवाही देने का अवसर समझें (मरकुस 13:9ख, 11; लूका 21:12ख, 13–15)[43] एक और समस्या झूठे भविष्यवक्ताओं (शिक्षकों) की होनी थी, जिन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह करना था (मत्ती 24:11; देखें मत्ती 24:24; देखें मरकुस 13:22)।[44] सताव और धोखे में आकर कुछ मसीहियों ने विश्वास से गिर जाना था। कुछ ने मसीही साथियों को और अपने परिवार के लोगों को भी पकड़वाना था (मत्ती 24:10, 12; मरकुस 13:12; लूका 21:16क)। मसीह ने कहा, ''परन्तु जो अन्त तक धीरज धरेगा, उसी का उद्धार होगा'' (मत्ती 24:13; मरकुस 13:13ख; देखें लूका 21:19)। वह उनके और हमारे विश्वासी रहने की कितनी राह देखता है!

सुसमाचार का प्रचार: यीशु ने ''अचिह्नों'' की सूची यह कहते हुए समेट दी कि ''राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब [यरूशलेम और मन्दिर का] अन्त आ जाएगा'' (मत्ती 24:14; देखें मरकुस 13:10)। कई सप्ताह बाद, अपने स्वर्गारोहण से कुछ पहले, प्रभु ने प्रेरितों को ''सारे संसार में जाकर सुसमाचार का प्रचार'' करने, ''सब जातियों को चेला बनाने'' की महान आज्ञा

दी (मरकुस 16:15; मत्ती 28:19)। प्रेरितों के काम की पुस्तक से हमें पता चलता है कि मसीह के अनुयायियों ने किस प्रकार ''पृथ्वी के कोने-कोने तक'' सुसमाचार को ले जाने का काम स्वीकार किया। (प्रेरितों 1:8)। परन्तु इन सब पर बात करने का समय नहीं है। इस प्रकार प्रभु ने ज़ोर दिया कि मन्दिर का ''अन्त'' आने वाले वर्षों में होना था। लगभग 63 ईस्वी (यरूशलेम के विनाश से 7 साल पहले), पौलुस यह लिख पाया कि सुसमाचार ''का प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया'' जा चुका था (कुलुस्सियों 1:23[45])।

सारांश

अ-चिह्नों (जो चिह्न नहीं हैं)और सम्भव तौर पर गुमराह करने वाले चिह्नों की सूची देने के बाद यीशु ने अपने चेलों को बताया कि उन्हें स्पष्ट तौर पर कैसे *पता* चल सकता था कि शीघ्र ही यरूशलेम का विनाश हो जाएगा (मत्ती 24:15; लूका 21:20)। अगले पाठ में हम मत्ती 24 का अपना अध्ययन वहीं से आगे बढ़ाएंगे।

इस समय, आप हैरान हो रहे होंगे कि परमेश्वर ने यह उलझाने वाला अध्याय क्यों रखा है। जैसा कि हम अगले पाठ में देखेंगे, स्पष्टतया एक कारण यरूशलेम को रोमी सेनाओं द्वारा घेर लेने के समय नगर में मसीही लोगों को रखना था। शायद वह हमारे दिमाग़ में यह बात डालना चाहता था कि जो कुछ प्रभु कहता है, हम उस पर निर्भर रह सकते हैं: अगले पाठ में, हम देखेंगे कि ''पत्थर पर पत्थर नहीं'' की उसकी भविष्यवाणी सौ प्रतिशत पूरी हुई थी। सम्भवतया इसका मुख्य उद्देश्य हर हाल में विश्वासी रहने की आवश्यकता पर ज़ोर देना है। हमें हमेशा *तैयार* रहना चाहिए (मत्ती 24:13, 42, 44)।

नोट्स

इस पाठ में अध्ययन किए गए मत्ती 24 के भाग के सम्बन्ध में, चाहें तो आप आने वाली पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, भाग 2'' के ''मत्ती 24 और प्रकाशितवाक्य 6'' लेख को देख सकते हैं।

इस पाठ में विस्तृत आयतें हमारी शृंखला के पाठों और प्रवचनों दोनों में दी गई हैं: अगली पुस्तक में ''जब यीशु हमारे चंदे को देखता है'' और ''समय आ गया है'' में इस और अगले पाठ में मत्ती 24 के अध्ययन के साथ देखें। तौ भी ''संसार की आवश्यकता'' (''यीशु को देखने'' की; यूहन्ना 12:21); ''यदि मैं ऊपर उठाया जाऊं'' (जीवनों पर क्रूसारोहण के प्रभाव पर बैटसैल बैरट का एक प्रवचन); ''इस संसार का राजकुमार'' (यूहन्ना 12:31; देखें मत्ती 4:8, 9; 2 कुरिन्थियों 4:4; इफिसियों 6:12); और ''तुम्हें किसकी प्रशंसा अधिक चाहिए?'' (यूहन्ना 12:43) संदेशों के लिए अलग की गई आयतें स्प्रिंगबोर्ड (उछाल तख्ते) का काम कर सकती हैं।

एक व्याज़्या

इस और अगले पाठ में अध्ययन के हमारे प्रबन्ध से जुड़ी कई चुनौतियां मिलती हैं।

एक चुनौती समन्वय की आयतों को चालीस मिलते-जुलते भागों में बांटने के मेरे लक्ष्य के कारण है: यह ढंग समन्वय के इस भाग के अलावा और हर जगह काम आया। यह बांटने वाली अच्छी जगह नहीं है। इसलिए जैसा कि आपने बाइबल पाठ की आयतों में देखा होगा, यह पाठ मत्ती 24 के अध्ययन का *आरम्भ* है और अगले पाठ में *पूरा* होगा। इसलिए मैं इन पाठों को दो भाग के अध्ययन के रूप में देख रहा हूं।

एक सम्बन्धित चुनौती: मूल योजना समन्वय के भाग पर एक बाइबल क्लास का पाठ, उसके बाद पाठ की आयतों में से एक भाग पर आधारित एक प्रवचन। क्योंकि हम इस और अगले पाठ में मत्ती 24 पर विस्तार में अध्ययन कर रहे हैं, इसलिए दूसरे पाठ के सम्बन्ध से प्रवचन के लिए स्पष्ट आयतें नहीं हैं। इसलिए अगले पाठ के बाद वाला प्रवचन *इस* पाठ से-यीशु को ढूंढ़ने आए यूनानियों की घटना से लिया गया है।

एक अलग समस्या: हम पक्का नहीं कह सकते कि यूहन्ना 12:20-50 की घटना (या घटनाएं) कब घटीं। रविवार के विजयी प्रवेश और शुक्रवार के प्रभु भोज के बीच यूहन्ना द्वारा लिखित यही एकमात्र घटना है। इसलिए हम पक्का नहीं जानते कि मन्दिर में मसीह की गतिविधियों के सम्बन्ध में इस आयत को कहां लगाएं। कई समन्वयों में इस कहानी को सोमवार की गतिविधियों के भाग के रूप में दिया गया है। मुझे यह वहीं उचित लगता है, जहां मैंने इसे रखा है। (1) यदि यीशु स्त्रियों के आंगन में था (जैसे वह ''विधवा की दमड़ी'' की घटना के समय था), अन्यजाति (यूनानी) वहां नहीं जा सकते थे जहां वह था और केवल विनती ही कर सके होंगे कि वह उनके पास आए। (2) यूहन्ना 12:37-50 इस बात का सार है कि यहूदियों ने यीशु को कैसे ग्रहण किया या और स्पष्ट कहें, तो यहूदी अगुओं ने उसे कैसे स्वीकार *नहीं* (किया)। इस सार में मसीह के अन्तिम बार मन्दिर से जाने की पृष्ठभूमि मिलती है।

टिप्पणियां

[1]यह और अगला पाठ अध्ययन के हमारे प्रबन्ध के सम्बन्ध में कुछ विशेष चुनौतियां देते हैं। पुस्तक में आगे ''एक व्याख्या'' देखें। [2]मन्दिर का भण्डार स्त्रियों के आंगन में रखा था (देखें मरकुस 12:41; लूका 21:1)। इसकी स्थिति के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 102 पर पर मन्दिर का रेखाचित्र देखें। [3]बी. एस. डीन, ''बाइबल इतिहास की एक रूपरेखा,'' पृष्ठ 118 देखें। [4]हम पक्का नहीं कह सकते कि यीशु की सेवकाई के अन्तिम दिनों में यह घटना कहां होनी चाहिए, पर यहां यह ठीक लगती है। [5]यूहन्ना 12:42 में ''अधिकारियों'' शब्द में आराधनालय के अधिकारियों के लिए हो सकता है। इस संदर्भ में यह महासभा के सदस्यों की बात होगी। अधिकारियों में पैदा हुए विश्वास के एक उदाहरण के लिए, देखें यूहन्ना 8:30, 31; 9:16. [6]''मसीह का जीवन, भाग 4'' में पृष्ठ 98 पर ''मैं अन्धा था और अब देखता हूं'' पाठ में चंगा होने वाले अन्धे के आराधनालय से बाहर निकाले जाने पर टिप्पणियां देखें (यूहन्ना 9:22, 34)। आराधनालय से निकाले जाने के सम्बन्ध में, अधिकारियों पर नकारात्मक प्रभाव उस अन्धे से भी अधिक होगा। [7]''मसीह का जीवन, भाग 3'' में पृष्ठ 75 पर संक्षिप्त टिप्पणियां देखें। उसी भाग में पृष्ठ 168 पर पतरस के ''अच्छा

अंगीकार'' पर संक्षिप्त टिप्पणियां देखें।[8]क्योंकि यूहन्ना ने अभी ही कहा था कि यीशु चला गया और उनसे छिप गया (यूहन्ना 12:36ख), हम यह मान लेते हैं कि ये शब्द यूहन्ना 12:23-36क के संदेश के तुरन्त बाद नहीं कहे गए थे। वे मसीह की सेवकाई के अन्तिम सप्ताह के दौरान किसी भी समय कहे गए हो सकते हैं। [9]''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 64 पर ''परमेश्वर के तुल्य'' पाठ के आरम्भ में देखें। [10]यूहन्ना 8:12 पर टिप्पणियों के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 4'' पृष्ठ 88 पर देखें। यूहन्ना 9 के सम्बन्ध में, उसी भाग में पृष्ठ 98 से ''मैं अन्धा था और अब देखता हूं'' पाठ में देखें।

[11]ऐसा ही वाक्य यूहन्ना 3:17 में कहा गया है। यीशु का ''प्रथम आगमन'' एक उद्धारकर्त्ता के रूप में था, न कि न्यायी के रूप में; पर दूसरी बार आने पर, वह हमारा न्याय करने वाला *होगा* (मत्ती 25:31, 32; प्रेरितों 17:31)। [12]इसकी तुलना प्रकाशितवाक्य 20:12 से करें, जो न्याय के समय पुस्तकें खुलने और लोगों का न्याय वैसे ही होने की बात करता है ''जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था।'' [13]पढ़ें यूहन्ना 2:11; 8:54. [14]पढ़ें 1 शमूएल 4:21, 22. [15]''भेंट की वस्तुएं'' मन्नत के पूरा होने में दी गई भेंटें थीं। NIV में ''परमेश्वर को समर्पित भेंटें'' है। [16]यह कार्य 64 ईस्वी तक यानी मन्दिर के विनाश के छह महीने तक पहले पूरा नहीं हुआ था। [17]मन्दिर के बारे में हमें अधिकतर जानकारी जोसेफस *वार्स* 5.5 से मिलती है। [18]मत्ती 22:7 पर टिप्पणियों के लिए, इस पुस्तक में पृष्ठ 105 पर पाठ ''क्या दिन है।'' देखें। मत्ती 23:38 पर टिप्पणियों के लिए, ''फरीसियों के खमीर से चौकस रहो'' पाठ देखें। लूका 13:35 पर टिप्पणियों के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 4'' पृष्ठ 139 पर देखें। यीशु ने नगर पर रोते हुए यरूशलेम के विनाश की भी बात की थी (लूका 19:43, 44)। परन्तु यह पक्का नहीं है कि उस समय चेलों ने उसके शब्द सुने थे या नहीं। [19]यरूशलेम पर रोते हुए यीशु ने यही बात पहले कही थी (लूका 19:44)। (पिछली टिप्पणी देखें।) [20]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 619.

[21]रॉबर्ट डंकन कल्वर, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 225-26. [22]मत्ती और लूका संकेत देते हैं कि चेलों ने सामान्य प्रश्न पूछे (मत्ती 24:3; लूका 21:7), जबकि मरकुस विशेष कर पतरस, याकूब, यूहन्ना और अंद्रियास का नाम बताता है (मरकुस 13:3)। [23]हिन्दी और KJV में ''जगत का अन्त'' है, परन्तु अधिकतर अनुवादक सहमत हैं कि ''युग'' बेहतर अनुवाद है। [बाइबल सोसाइटी द्वारा हिन्दी के संशोधित अनुवाद में नीचे टिप्पणी में ''युग'' दिया गया है-अनुवादक।] [24]पत्रियों में यह शब्द मसीह के द्वितीय आगमन के सम्बन्ध में मिलता है (देखें 1 कुरिन्थियों 15:23; 1 थिस्सलुनीकियों 2:19; 3:13; 4:15; याकूब 5:7, 8)। [25]विल एड वारेन, क्लास सिलेबस, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट: द सिनोपटिक गॉस्पल्स,* हार्डिंग यूनिवर्सिटी, 1991, 96. [26]यीशु ने पहले अपने द्वितीय आगमन की भविष्यवाणी की थी (देखें मत्ती 16:27; लूका 12:40; 17:22-37)। परन्तु यदि चेलों को यह समझ नहीं आई थी कि उसका मरना और जी उठना आवश्यक था, तो उन्हें यह भी समझ नहीं आई होगी कि जब प्रभु ने अपने द्वितीय आगमन की बात कही तो उसका क्या अर्थ था। [27]दूसरों द्वारा भी अपनी विशेष शिक्षा के समर्थन के लिए मत्ती 24 का इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण के लिए इसका इस्तेमाल वे लोग करते हैं जिनका विश्वास है कि प्रभु का ''द्वितीय आगमन'' 70 ईस्वी में यरूशलेम का विनाश के समय हो गया था। इस अजीब शिक्षा ने कलीसियाओं को कई इलाकों में बांट दिया है। [28]ए. टी. रॉबटस: *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स फ़ॉर स्टूडैंट्स ऑफ़ द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड रोअ, 1950), 173. [29]इन आयतों पर टिप्पणियां अगले पाठ में देखें। [30]अगले पाठ का अध्ययन करें। एक और प्रमाण कि मत्ती 24 का पिछला भाग द्वितीय आगमन पर केन्द्रित है यह है कि ये आयतें न्याय वाले अध्याय में ले जाती हैं (मत्ती 25)।

[31]मत्ती 24 पर और इससे सम्बन्धित आयतों पर अध्ययन करते हुए, बाद में और अन्तर दिखाए जाएंगे। [32]इस ढंग का एक खतरा यह है कि यदि आप ऐसा करते हैं तो दूसरे भी कर सकते हैं। इससे प्रिमिलेनियलिस्टों को अपने आप ही यह निर्णय लेने की अनुमति मिल जाएगी कि मत्ती 24 का पहला भाग यरूशलेम के विनाश के बजाय द्वितीय आगमन की बात कर रहा है। [33]यरूशलेम का विनाश चालीस से भी कम वर्षों में यानी यीशु द्वारा इन शब्दों के कहे जाने के कुछ लोगों के जीवन काल में ही हो गया। [34]आर. टी फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग*

टू मैथ्यू, टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैन्ट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं, 1985), 346. [35]जैक पी. लूईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू, पार्ट 2,* द लिविंग वर्ड कमैन्ट्री सीरीज़, सं. एवरेट फर्ग्यूसन (अबिलेन, टैक्सस: एसीयू प्रैस, 1976), 129-30. [36]मत्ती 24 का यह अध्ययन ईस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवैस्ट सिटी, ओक्लाहोमा में 30 सितम्बर 1997 को दिए गए स्टैफर्ड नॉर्थ के लैक्चर पर आधारित है। टिप्पणियों और अगले पाठ के बाद नोट्स में अन्य स्रोतों के बारे में बताया जाएगा। [37]इसका सम्भावित अपवाद मत्ती 24:27 है, जहां यीशु अपने द्वितीय आगमन की बात करता लग रहा है। [38]उन ''कठिनाइयों'' में मत्ती 24:27, 29-31 शामिल हैं, जो यरूशलेम के विनाश के बजाय द्वितीय आगमन के बारे में लगती हैं। [39]जोसेफस ने उस समय के कई अगुओं का उल्लेख किया है, जिन्होंने उठकर लोगों को अपने पीछे लगा लिया (*वार्स* 2.12.4-5; *एंटीक्विटीस* 20.5.1-2; 20.8.6)। [40]लूका के विवरण में ''आकाश से भयंकर बातें और बड़े-बड़े चिह्न प्रकट होंगे'' जोड़ा गया है। इन शर्तों में तूफ़ान, गढ़े और बाढ़ जैसी कोई स्पष्ट प्राकृतिक आपदाओं का उल्लेख नहीं है।

[41]प्रेरितों के काम तथा नये नियम की अन्य पुस्तकें कलीसिया पर आने वाले सताव के बारे में बताती हैं। [42]क्योंकि प्रभु ने पहले ही कहा था कि उनमें से कुछ मारे जाएंगे (लूका 21:16) इसलिए यह प्रतिज्ञा कि ''तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे'' (लूका 21:18) का अर्थ यह होना चाहिए कि मारे जाने के बावजूद उनका नाश नहीं होना था। प्रभु पुनरुत्थान में उन्हें अन्तिम विजय देने की प्रतिज्ञा कर रहा था। [43]हम जानते हैं कि पौलुस हाकिमों तथा राजाओं के सामने खड़ा हुआ (देखें प्रेरितों 26); अन्य प्रेरित भी खड़े हुए होंगे। यह प्रतिज्ञा कि अपने बचाव के लिए उन्हें बोलने की प्रेरणा पवित्र आत्मा की ओर से मिलनी थी प्रेरितों के लिए प्रतिज्ञा थी, न कि हमारे लिए। दूसरों को सिखाने के योग्य होने के लिए हमें पहले परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना आवश्यक है। [44]इस भविष्यवाणी के पूरा होने के लिए, देखें 2 पतरस 2:1; 1 यूहन्ना 4:1. [45]अधिकतर लोग इस बात से सहमत हैं कि इस आयत में ''सारी सृष्टि'' वाक्यांश मुख्यतया रोमी साम्राज्य के लोगों के लिए है। लूका 2:1 में, ''सारे जगत के लोगों'' वाक्यांश का इस्तेमाल रोमी साम्राज्य के लिए किया गया था। स्पष्टतया उस साम्राज्य के हर भाग के लोगों को सुसमाचार सुनने का अवसर दिया गया था (देखें रोमियों 1:5, 8; कुलुस्सियों 1:5, 6; 1 थिस्सलुनीकियों 1:8)।

चार्ट 1 : मत्ती 24 में भिन्नताएं

यरूशलेम का विनाश (मत्ती 24:4-35)	**मसीह का द्वितीय आगमन (मत्ती 24:36-41)**
पहले हलचल वाले समय होंगे (आयतें 5-12)	पहले शांत समय (नूह के दिनों की तरह; आयतें 37-39)
स्पष्ट चिह्न होगा जिसे मसीही लोग जान सकते हैं। (यरूशलेम का सेनाओं से घिरना [आयत 15; लूका 21:20])।	चेतावनी के लिए कोई चिह्न नहीं होगा; समय को कोई नहीं जानता (आयत 36); यह अप्रत्याशित होगा (आयत 39), बिना बताए चोर के आने की तरह होगा (आयत 43)
इस घटनाओं से लोग भाग सकेंगे (आयत 16)	इस घटना से लोग भाग नहीं पाएंगे (एक ले लिया गया, एक छोड दिया गया; आयतें 40:41)

चार्ट 2: मत्ती 24 की एक रूपरेखा

चेलों के प्रश्नों के दो सैट	यरूशलेम के विनाश पर यीशु का ज़ोर					द्वितीय आगमन पर यीशु का ज़ोर
आयत 3	आयतें 4-35					आयतें 36-51
"ये बातें कब होंगी?"	आयतें 4-14 कोई चिह्न नहीं दिया गया।	आयतें 15-20 चिह्न बताया गया है (लूका 21:20)।	आयतें 21-28 यरूशलेम के विनाश का विवरण दिया गया है।	आयतें 29-31 उसके तुरन्त बाद होने वाली घटनाएं बताई गई हैं।	आयतें 32-35 आयत 34 बताती है कि कब होगा: "इस पीढ़ी" में।	
"तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिह्न होगा?"						आयतें 36-51 "कोई चिह्न नहीं दिया जाएगा!"